उगता सूरज

2010-2011

उगता सूरज गान

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

देखो हमने पढ़ना सीखा
हर मुश्किल से लड़ना सीखा।
आओ तुम भी बच्चों आओ
और हमारे संग में गाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

दिल में ये अरमान जगाओ
घर–घर में शिक्षा अपनाओ।
कोई बच्चा छूट ना जाये
घर–घर में आवाज लगाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

पढ़ो लिखो इंसान बनो तुम
अपने देश की जान बनो तुम
सब बच्चों को ये बतलायें
किरणों से भी आगे बढ़ जायें।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

SADRAG

Social
And
Development
Research &
Action
Group

L-16, Sector-25,
Noida-201301, U.P., India

Programme Locations:
Community Centres Harola,
Nithari, Nayabans, Barola,
Agahpur, Sector-50, Basti
Ph.: 9313678369 / 0120-3264313

E-mail: mail@sadrag.org
Url: www.sadrag.org

Printed by: GALAXY • 98105 73082

उगता सूरज की झाँकी पिछले वर्ष शुरू हुई थी। इस किताब की यह दूसरी प्रति है जहाँ हमारे बच्चों ने बढ़ चढ़कर अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया है। कहा जाता है कि लिखने की प्रथा जब शुरू हुई थी तभी से मानव जाति में परस्पर विचारों का आदान–प्रदान होना आरम्भ हुआ था। आपस में समझ और सूजबूझ की शुरूआत हुई थी। इसी से प्रेरणा लेकर उगता सूरज किताब की शुरूआत की गई है। हमारी संस्था से जुड़ा हर बच्चा कोशिश करता है कि वह अपनी फोटो और अपना नाम इस किताब में लिखा हुआ देखें। यह आत्मविश्वास की तरफ बढ़ने वाला पहला कदम है। हमें गर्व है कि हमारे बच्चे इस रास्ते पर चल रहे हैं।

उगता सूरज एक ऐसा कार्यक्रम है जिसके तहत हमारी कोशिश रहती है कि कोई भी बच्चा किसी भी कारणवश स्कूल में जाने से वंचित न रह सके। हमने पाया है कि जो परिवार पलायन करके नौएडा आते हैं उनके बच्चे शिक्षा के माध्यम से कोसों दूर हो जाते हैं। उनका बचपन या तो काम के लिए रह जाता है या फिर वे गलत हाथों में पड़कर गलत राह पर चलने लगते हैं। इन्हीं बच्चों के लिए है उगता सूरज। पिछले कई सालों से उगता सूरज के तहत कितने मासूम बचपन विद्या की राह पर चलने लगे हैं। कितनी लड़कियां घर से निकलकर अब हर सुबह स्कूल जाती हैं। कितनी माताओं ने खुद अपने बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए हमारा साथ दिया है। हम उन सबके आभारी हैं जिन्होंने उगता सूरज की महत्ता को समझा और हमारा साथ दिया।

इस किताब का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि हमारे facilitators ने इसमें बढ़ चढ़कर भाग लिया है।

आने वाले वर्ष के लिए शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. माला भंडारी
अध्यक्ष
सादरग

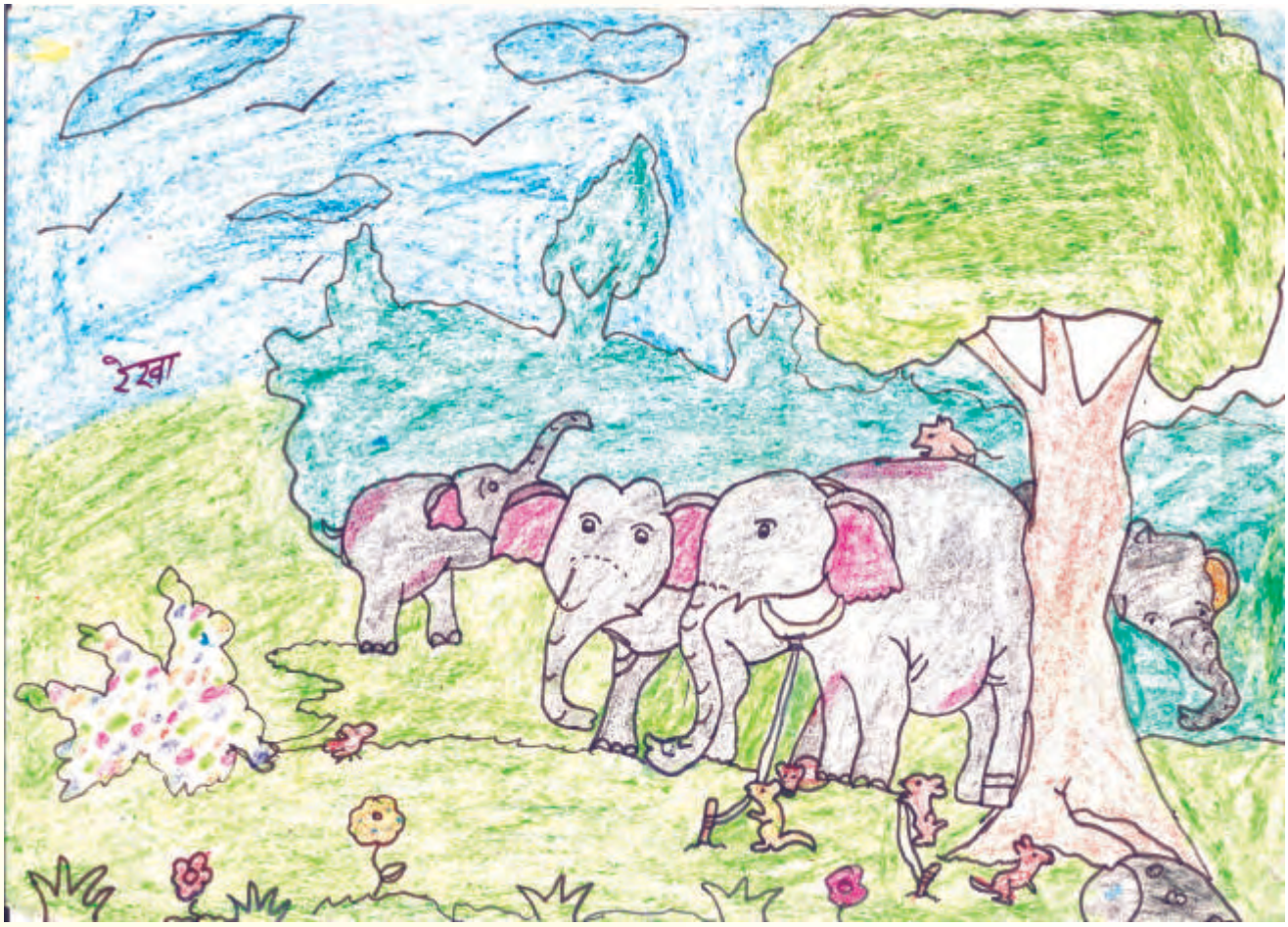

▲ **Rekha,** IIIrd

"उगता सूरज"

चंचल
Facilitator

मन में एक अजीब सा तूफान था
जब देखा नन्हें कदमो को
दिल में एक जाग–गया अरमान था
कुछ करना है इन बच्चों के लिए
कुछ ऐसी ही आशा जाग उठी

हम दौड़ पड़े इस आशा में
शायद मंजिल इस ओर मिले
अब ठान लिया इन कदमों को
पीछे ना हम हटायेगें
आगे बढ़ना है जिंदगी
कुछ करके ही दिखलायेंगे

मन में सोच कर बैठे थे
बस रोशनी का इंतजार था
जब देखा उगता सूरज तो
अपने आप पर हमें हो गया विश्वास था
अब तो हमने मंजिल पा ली
सब मिट गया अंधकार था

दिल में भी अब एक अजीब सा
सुकुमार था

चंचल
बरौला

"शिक्षा ही जीवन है"

बगैर पेड़ के लगते नही फल
आज कुछ करोगे तो पाओगे कल
शिक्षा को समझने के लिए मन की आंखें खोल
जो पल बेकार में गुजरते हैं, उन्हें बना अनमोल

शिक्षा तुझसे वक्त के सिवा, कुछ नही लेती है।
इसके साथी बन जाओ तो, जिन्दगी सवांर देती है।

मिटे अरमान टुटे सपने बरसों
मेहनत करके कुछ नही पाया
कामयाब करने मंजिल तक ले जाने
शिक्षा नया दौर लाया।

जिसकी अक्ल की आँखें बंद हो
वही शिक्षा से मुंह फेरे
आबाद हो जाए वह शयाना जो
शिक्षा के पास आकर ठहरे

कल पछताऐंगें हमसे जो करते है दिल्लगी
हम तो सवांरने चले है शिक्षा से सब की जिंदगी

अभिजीत कुमार,
उम्र–14 वर्ष

तोता

दादाजी का था एक पोता
ले आया था कहीं से तोता
जब देखो करता था टेटें
लाल मिर्ची था वो खाता
पिंजरे में ही दौड़ लगाता
जब कोई आता घर पर
मीठा मीठा गाना सुनाता

निशा कुमारी
13 वर्ष

"पानी"

पानी कहाँ है। घड़े में।
कहाँ–कहाँ है। कमरे में।
कमरा कहाँ है। घर में।
घर कहाँ है। दिल्ली में।
दिल्ली कहाँ है। भारत में।
भारत कहाँ है। एशिया में।
एशिया कहाँ है। पृथ्वी में।
पृथ्वी कहाँ है। पानी में।
पानी कहाँ है। घड़े में।

सरस्वती
उम्र–16
उगता सूरज, बरौला

पर्यावरण की महिमा

पर्यावरण की महिमा जाने
धरती का सुख दुख पहचाने
पेड कटे तो धरती रोती
सूनी–सूनी धरती होती
हरियाली की चादर ताने
धरती का सुख दुख पहचाने।
वायु सांसों मे घुल जाती
वृक्ष हमारा पालन करते।
हम वृक्षों की महिमा जाने
धरती का सुख दुख पहचाने
स्वच्छ रखे पीने का पानी
वायु प्रदूषण है नादानी
आगंन मे हरियाली लायें
गाँव–गाँव खुशहाली लाए
चलो पेड़ पर पेड़ लगाने
धरती का सुख दुख पहचाने।

अभिजीत
उम्र–14
बरौला

शिक्षाप्रद वाक्य

मुरख मारे लाठी से, कि कान फुट जाई,
ज्ञानी मारे ज्ञान से, कि इक अंग–अंग
भीग जाई लहरो से डरकर नौका पार
नही होती कोशिश करने वालों की कभी हार
नही होती नन्हीं चींटी दाना लेकर चढती है
दीवार पर, फिसलती है सौ बार पर उसकी
कोशिश बेकार नही होती। दीपक देता प्रकाश
सभी को, किन्तु दीपक तले ही अंधेरा होता है।
ढुढते है ईश्वर को सारे जहां मे,
किन्तु ईश्वर तो हमारे अन्दर ही होता है।

पारूल उपाध्याय
उम्र–15
उगता सूरज–सेक्सन–49

मन की आवाज

आज एक घर मे अजीब सी चहल पहल थी
शायद कोई आने वाला था जिसकी इतनी खुशी थी।
लेकिन जब मेरी आँखें खुली
मैंने देखा सभी लोग उदास थे
जन्म देने वाली माँ भी यही सोच
कर बैठी थी
शायद मेरे लडका होता जो
होता मेरी आँखों का तारा
बुढ़ापे की होती लाठी
सुख दुख का होता सहारा
दादी भी आँगन में सिर पकड़े
बैठी थी।
हाय मेरे बेटे के आँगन में ही
लड़कियों की लाइन लगनी थी
मेरे पिता जी के माथे पर तो
लाखों चिन्तायें दौड़ पड़ी
मैंने ऐसा भी क्या बुरा किया
जिसकी मुझे सजा मिली
मैं सोच रही थी मन ही मन
मुझे ये फर्क हटाना है।
लड़का लड़की का भेद हटाकर
सबको एक समान बनाना है।
इसीलिए ही तो भगवान ने मुझे धरती पर उतारा है।

चंचल,
Fecilitator
बरौला

कुछ तो होश में आओ

दूसरे की नकल करके अपनी सभ्यता भूल गए
याद करो उन वीरों को जो फांसी पर झूल गए
याद करो लाला जगत नारायण को
जिन्होंने देश के लिए बलिदान दिया
उन्हीं के परिवार ने अब बुजुर्गों को सम्मान दिया
आज के नौजवानों उठो, तुम्हें जगना और जगाना होगा।
भ्रष्टाचार मिटाना होगा,
गरीबों को इन्साफ दिलाना होगा
डूब रही है देश की नैया
इसको पार लगाना होगा,

शिवम
उम्र–15
उगता सूरज, बरौला

शेर और खरगोश की कहानी

एक जंगल में एक शेर रहता था। वो शेर उस जंगल का राजा था। एक दिन वो सो रहा था। सोते समय एक चूहा आया और वो शेर के सामने से धीरे–धीरे से जा रहा था। जाते समय एक पत्थर गिरने की आवाज आई फिर शेर ने अपनी आँखें खोली और चूहे से बोला कि मैं तुम्हें खा जाऊँगा, तो चूहे ने कहा ही मुझे मत खाओ मै तुम्हारी मदद करूंगी। तो शेर ने कहा कि ठीक है। एक दिन जंगल में एक शिकारी आया और शेर को जाल में फंसा लिया तो उसने चूहे को आवाज लगाई तो चूहा आया और उसने जाल को कुतर दिया। और वो दोनों खुशी–खुशी दोस्त बन गए।

सुबी कुमारी
उम्र–10
उगता सूरज, निठारी

पढ़ाई

लेकर छोटा बस्ता मैं,
स्कूल में पढने जाऊँगा।
अच्छी–अच्छी किताबें पढ़कर,
घर पर वापस आऊँगा।
ज्यों ही छुट्टी होगी मेरी,
सीधा घर मैं आऊँगा।
दरवाजे पर खड़ी मम्मी से,
दौड़कर लिपट मैं जाऊँगा।

रेखा
उम्र–11 वर्ष
उगता सूरज, निठारी

मेरी प्यारी नाव

आओ आओ जल्दी आओ
रंग बिरगें कागज लाओ
छोटी सी एक नाव बनाओ
उसको पानी में तैराओ
देखो कैसी चलती नाव
लहरों के संग बहती नाव
ऊपर जाती नीचे आती
जिसको कोई चलाता ना
फिर भी चलती जाती नाव
कितनी सुंदर कितनी प्यारी
रंग बिरगीं अपनी नाव

पूजा
12 वर्ष, उगता सूरज,
निठारी

Rekha, IIIrd

Rekha, IIIrd

मन करता है–

मन करता है, सूरज बनकर,
आसमान में दौड़ लगाऊँ।
मन करता है चाँद बनकर,
सब तारों पर आकर दिखाऊँ।
मन करता है पापा बनकर,
मैं भी अपनी मूंछ बनाऊँ,
घर में सब पर धौंस जमाऊँ।
मन करता है कोयल बनकर,
मीठे–मीठे बोल सुनाऊँ।
मन करता है चिड़िया बनकर,
चिं–चिं, चूँ–चूँ शोर मचाऊँ।
मन करता है चकरी लेकर,
पीली लाल पतंग उड़ाऊँ

सबसे बढ़कर!

आलपीन के सिर होते, पर बाल न होते उसके एक।
कुर्सी की दो बाँह है, पर फेंक न सकती है गेंद।
कंघी के हैं, दाँत मगर वह, चबा नही सकता है खाना।
गला सुराही का पतला है, किन्तु न गा सकती गाना।
होता है मूँह बड़ा घड़ा का, पर वह बोल नहीं सकता।
चार पैर पलंग के होते, पर वह बोल नहीं सकता।
नारियल के आँख होते है, पर वह देख नहीं सकता।
जूते के है जीव मगर वह, स्वाद नहीं चख सकता।

संतरे के रस को जूस कहते है।
जो ग्रिटींग कार्ड न दे उसे कंजूस कहते है।

सूखी है तलवार मगर धार कम नहीं,
रहतें हैं दूर मगर प्यार कम नहीं।

बिट्टू कुमार
उम्र–12

पाँव में जूता सिर पर हैट,
बबलू लेकर निकला बैट।
बड़े पेड़ की विकिट बनाई,
फिर क्रिकेट का खेल जमाया।
चौंके, छक्के, खूब लगाये,
लगातार दो शतक बनायें।

हजामत

चाचा हजामत करते अन्दर,
खिड़की में से देखे बन्दर।
उठकर चाचा गए नहाने,
बन्दर दाढ़ी लगा बनाने।
कटा गाल भागा चिल्लाता,
चीं–चीं करता शोर मचाता।

कीर्ती
हरोला

समाज

हमारे समाज में लोग जात–पात का भेदभाव क्यों करते है। अगर हमारे बीच में कोई छोटी जाति का व्यक्ति आ जाये तो उसे जमीन पर बैठा देते है। ऐसा क्यों हम लोग करते है? हम सभी भी मनुष्य है और वो भी एक मनुष्य ही है। हम उससे कहते है कि तुम किसी चीज को हाथ मत लगाना। मैं ऐसे लोगों से पूछती हूँ कि आप लोग ऐसा क्यों करते है? ऐसे पढ़े लिखे लोगों का रहना बेकार है जो किसी इन्सान का दुःख दर्द ना समझे। लोगों को कभी भी अपनी इन्सानियत नही भूलनी चाहिए और अपना कर्तव्य, धर्म, फर्ज कभी भी नही भूलना चाहिए। मैं आप लोगों से पूछती हूँ कि हम सभी भगवान के ही घर से आते है। वो हम किसी में से भेद भाव नही समझता है तो हम कौन होते हैं, जात–पात का भेद भाव करने वाले। अगर जात–पात का भेदभाव करते हो तो हमें कभी भी इन्सानियत नही भूलनी चाहिए।

मै कोई जात–पात नही मानती हूँ। मेरा एक ही धर्म है वो है सिर्फ इन्सानियत का धर्म।

धन्यवाद

रजनी इन्सा
कक्षा–9, आयु–15
सारथक

स्वतंत्रता दिवस

खिल उठी कली–कली,
नया विकास जगा!
स्वतंत्रता दिवस की ज्योति लिए,
नया प्रभात आ गया।
द्वार–द्वार सज गए,
गीत गा उठे सभी,
तार–तार बज गए।
एकता की राह पर,
शांति के दीप जल गए।
स्वतंत्रता दिवस लिए,
नया प्रभात आ गया।

इस वंदना

ईश्वर तूने जगत बनाया
सूरज चाँद तारे चमकाया
नदी पहाड़ गुफाएँ नाले
नभ सागर तालाब निराले
चिंटी से मानव तक
सारी तूने रची सृष्टि प्यारी
रहने के लिए जगह बनाया
पीने के लिए जल बरसाया
खाने को अन्न उपजाया
तू ही है विद्या का दाता
तुझको ही मै शीश नवाता।

गौरव,
उम्र 10 वर्ष
हरोला

बन्दर की आदत है खोटी
लेता छीन हाथ से रोटी
घुड़की देखकर कभी डराता
पेड़ों पर चढ़ कर इतराता
जब लेता है पकड़ मदारी
खेल दिखाता है तब वह भारी।

पहेली

पानी इसका साथी है ठंड पास न आती है
टुकुर–टुकुर देखती हमें फिर जल में छिप जाती है।

उत्तर–मछली

अगर पेड़ भी चलते–होते कितने मजे हमारे होते
बाँध तने में उनके, रस्सी चाहे जहाँ कही ले जाते
जहाँ कही भी धूप सताती उनके नीचे हम छिप जाते
भूख सताती अगर अचानक तोड़ मधुर फल खाते
आती कीचड़ बाढ़ कहीं तो झट उनके ऊपर चढ़ जाते

आरती कुमारी
उम्र–11, हरोला

बिल्ली

म्याऊँ–म्याऊँ करती आती
घर के चूहे चटकर जाती
अवसर मिले तो दूध न छोड़े
आहट पाते ही यह दौड़े।

अंगूर

अंगूरों की बेल सुहानी मैंने भी खाने की ठानी
गुच्छे उसके कितने प्यारे जी करता है तोड़ लूँ सारे।
घर में इसकी बेल लगाऊँ मित्रों का मैं दिल ललचाऊँ।

जोकर

इक जोकर सरकस में होता कभी हँसता कभी वह रोता
रंग–बिरंगें यह कपड़े पहने मत पूछो क्या–क्या करता।

परदेशी
उगता सूरज
उम्र 11 वर्ष
आगह पुर

एक मोटा व्यक्ति सड़क से जा रहा था। सामने से आ रहा किंटू उसे देखकर रूक गया। मोटा व्यक्ति बोला–तुम रूक क्यों गए भाई। किंटू ने जवाब दिया–सामने बोर्ड पर लिखा है कि पहले भारी वाहनो को जाने दो।

ग्राहक– वाह। तुम्हारे यहाँ का खाना तो बहुत स्वादिष्ट है। मुझे पहले यहाँ आना चाहिए था।

वेटर– हाँ सर आप दस दिन पहले आते तो ये खाना आपको ताजा मिलता।

रामू– एक शादी में खाना खा रहा था।

रामू– क्या यार इतनी देर सी खाना खा रहे हो पेट नही भरा रामू – पेट तो भर गया। क्या करूँ यार कार्ड में खाने का समय।

पागल (चाइनीज से) तुम अमरीकी हो ना या चाइनीज?

मै चाइनी हूँ।

पागल– नही तुम अमेरिक हो

चाइनीज (गुस्से मे) हाँ–हाँ मै चाइनीज हूँ।

पागल – पर तुम दिखते तो चाइनीज हो।

दीपक
क्लास–6
रोसरी पब्लिक स्कूल, विद्यारत्न

इस वंदना

ईश्वर तुने जगत बनाया
सूर्य चाँद तारे चमकाया
नदी पहाड़ गुफाएँ नाले
नभ सागर तालाब निराले
चिंटी से मानव तक सारी तुने रची सृष्टि
प्यारी रहने के लिए जगह बनाया
पीने के लिए जल बरसाया
खाने को अन्न उपजाया
तूही है विद्या का दाता
तुझको ही मै शीश नवाता
नाम–राजा, क्लास–चौथी

स्वतंत्रता दिवस

खिल उठी कली–कली, नया विकास जगा!
स्वतंत्रता दिवस की ज्योति लिए,
नया प्रभात आ गया।
द्वार–द्वार सज गए, गीत गा उठे सभी,
तार–तार बज गए।
एकता की राह पर, शांति के दीप जल गए।
स्वतंत्रता दिवस लिए, नया प्रभात आ गया।

राजा
उम्र–11, हरोला
क्लास–4

चन्दा के कुरते

एक बार की बात चन्द्रमा अपनी माँ से, "कुरता एक नाप का मेरी माँ मुझको सिलवा दो। नंगे तन बारह महीने मैं यूं ही घूमा करता, गर्मी–वर्षा जाड़ा हरदम बड़े कष्ट से सहता।" माँ हँसकर बोली सिर पर रख हाथ, चूमकर मुखड़ा "बेटा, खूब समझती हूँ मैं तेरा सारा दुखड़ा। लेकिन तू तो एक नाप में कभी नहीं रहता है, पूरा कभी–कभी आधा, बिलकुल न कभी दिखाता है।" "आहा माँ, फिर तो हर दिन की मेरी नाप लिवा दे, एक नहीं पूरे पन्द्रह कुरते तू मुझे सिला दे।"

कीर्ती कुमारी
उम्र 9 वर्ष
नौयडा पब्लिक स्कूल, विद्यारत्न

HAPPY DIWALI

Earth Day

Sanju Jha

औरत

आज अपने पैरों को देखकर,
वह फिर शरम से गड़ी है।
बरसों पहले जहाँ खड़ी थी,
आज भी वहीं खड़ी है।
कितनी बड़ी गलतफहमी थी,
कि वह अपने अधिकार
के लिए खड़ी थी ।
किन्तु आज भी इसका कार्य क्षेत्र,
रोटी, मिर्च मसाला, पापड़ बढ़ी है।
वर्षों से हमने सुना है, औरत बड़ी नकचढ़ी है।
पर हर जगह आरोपों के सीसे में,
इसकी तस्वीर आज भी गड़ी है।
आज तुम, राम के अनुयायी कहलाते हो,
और एक मात्र टी. वी. के लिए अपनी
सीता को जलाते हो।

संजू झा
Facilitator

बिल्ली

बिल्ली गई दिल्ली
दिल्ली में था बन्दर,
लाल किले के अन्दर,
बन्दर ने दी मूँगफली,
बिल्ली लेकर जो चली।
रास्ते में था भालू,
भालू बोला मै खाऊँ,
बिल्ली बोली झट म्याऊँ,
बिल्ली ने मारा पंजा
भालू हो गया गंजा।

अफसाना
उम्र–11, निठारी

पर्यावरण की महिमा

पर्यावरण की महिमा जाने
धरती का सुख–दुख पहचानें।
पेड़–काटे तो धरती रोती
सूनी–सूनी धरती होती।
हरे–भरे घने वृक्ष सम्पदा,
करें जतन ये रहे सदा।
हरियाली का चादर ताने,
धरती का सुख–दुख पहचानें।
नदियों का जल जीवन देता,
रवि प्रकाश और ऊर्जा देता।
वायु सासों में घुल जाती,
वृक्ष हमारा पालन करते।
हम वृक्षों का महिमा जानें,
धरती का सुख–दुख पहचानें।
स्वच्छ रखे पीने का पानी,
वायु प्रदूषण है नादानी।
आंगन में हरियाली लायें,
गाँव–गाँव खुशहाली लाए।
चलो पेड़ पर पेड़ लगाने,
धरती का सुख–दुख पहचानें।

संजू झा,
निठारी
Facilitator

कुसुम आई। कुसुम गुड़िया लाई।
अब कुसुम घर जा।
कुसुम गुड़िया घर जा।
कुसुम गुड़िया रख।
माता खाना लाई।
सुनीता आ। खाना खा।
खाना खाकर पाठशाला जा।
बुलबुल डाल पर आई।
बुलबुल का गाना सुन।
कुसुम मन गुनगुनाती।
बुलबुल फिर मीठा गीत सुनाती।
बुलबुल अब तुम फिर आना।
तब अपना मीठा गीत सुनाना।
बुलबुल उड़ गई फुर–फुर–फुर।
अब कुसुम पाठशाला जाती।
गुड़िया घर पर ही रख जाती।

गुड्डू
10 वर्ष
उगता सूरज,
निठारी

कहानी

एक आदमी था और उसके चार दोस्त थे। वह सब मेला देखने जा रहे थे। उसके पास जलेबी की दुकान लगी थी और उसे जलेबी बहुत पंसद था। उसने क्या करा वह चारों दोस्तों को बोला तुम चलो मैं आता हूँ। फिर वह चुपचाप जलेबी की दुकान पर आया और जलेबी लेकर वहाँ से चल पड़ा। वहाँ पर एक बैंक के अन्दर गया और एक कोने में चुपचाप जलेबी खाने लगा। वहाँ पर एक नाली थी। पर वह नाली सूखी थी। उसमें पानी नहीं था। वह जलेबी खाने जा ही रहा था। तभी जलेबी नाली में गिर गई

अब वह क्या करता जलेबी नाली में से उठाकर चुपके से खा ली फिर वह अपने दोस्तों के पास आया वहाँ पर प्रोग्राम देखने लगा। वहाँ पर एक सिंगर गाना गाने आया वह गाना गा रहा था, कहो तो आज बोल दूँ तुम्हारी पोल खोल दूँ। वह आदमी सोचने लगा कहीं इसने मुझे जलेबी खाते देख तो नहीं लिया। उसने उस आदमी का मुँह बंद करने के लिए जेब से 100 रूपये निकाल कर दे दिए। वह सिंगर बहुत खुश हो गया उसने सोचा मेरा गाना बहुत अच्छा लगा फिर वह और जोर से गाने लगा, कहो तो बोल दूँ तुम्हारी पोल खोल दूँ। फिर वह 100 रूपये निकाल कर दे दिया। ऐसे ही वह सिंगर गाना गाता रहा और वह आदमी ऐसे ही पैसे देता रहा और ऐसे में उसका सारा पैसा खत्म हो गया। फिर सिंगर गाना गाने लगा कहो तो बोल दूँ तुम्हारी पोल खोल दूँ। उस आदमी को गुस्सा आया वह सिंगर से कहने लगा अबे तू क्या बोलेगा यह ही बोलेगा कि मैं नाली में से जलेबी उठाकर खा गया। उस आदमी को पता ही नही था। वह तो एक गाना गा रहा था और आदमी सोचने लगा कि कहीं ये मेरी बात तो नहीं कर रहा।

नेहा कुमारी
कक्षा 4
नौएडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न

चुटकुले

चिटूं को नाखून खाने की आदत थी। उसके मम्मी पापा ने उसे स्वामी रामदेव के पास भेजा और अब चिंटू पैर के नाखून भी आराम से खा सकता है।

आदमी डॉक्टर से – मुझे बिमारी है।
खाने के बाद भूख नहीं लगती, सोने के बाद नींद नहीं आती काम कँरू तो थक जाती हूँ डॉक्टर –
सारी रात धूप में लेटो ठीक हो जाओगी।

माला कुमारी
12 वर्ष
उगता सूरज, नयाबाँस

"खेल में कभी न लड़ना"

बज गई घंटी हो गई छुट्टी
बच्चो खेलो आँख–मिचौली
देखो! खेल में कभी न लड़ना
दुश्मन को भी दोस्त बनाना

जापानी गुड़िया

मेरी गुड़िया है जापानी
दिखती है परियों की रानी
दूध नहीं वो पीती है
हवा भरो तो जीती है

नीकीता
हरोला

बिल्ली

दबे पाँव आ जाती बिल्ली
चूहे को खा जाती बिल्ली
म्याऊँ–म्याऊँ करती बिल्ली
आहट से भी डरती बिल्ली
पीकर दूध चाटकर मूँछें
वह धीरे–धीरे भागी
सारा दूध सफाचट था
जब मम्मी सोकर जागी

"बीमार गुड़िया"

गुड़िया मेरी हुई बीमार
सौ से उपर चढ़ा बुखार
कुल्फी दूध मलाई की
चाट–पकौड़ी खाई थी
इसीलिए गुड़िया हुई बीमार
डॉक्टर का है यही विचार

आकाश
हरोला

होली

रंग–बिरंगी होली आयी
सब बच्चों में मस्ती छायी
भरकर रंग–गुलाल से झोली
निकल पड़ी बच्चों की टोली

"सफाई"

कूड़ा कूड़ेदान में डालो
इधर–उधर न उसे उछालो,
सदा सफाई को अपनाओ
सुंदर अपना नगर बनाओ,

बंदर मामा

बंदर मामा पहन पाजामा
ठुमक–ठुमक ससुराल चले
सिर पर टोपी, गले में माला
खूब बजाते माल चले

अन्नु
उम्र–8
हरोला

"चिड़ीयाँ मुझे बना दे राम"

चिड़ीयाँ मुझे बना दे राम
छोटे पंख लगा दे राम
बागों में उड़ जाऊँगी
ताजे फल मैं खाऊँगी

अन्नु
हरोला

Life

Life is an adventure, take it
Life is danger, face it
Life is promise, keep it
Life is love, do it
Life is sorrow, accept it
Life is discipline, develop it
Life is hard work, try it
Life is corporation, join it
Life is friendship, believe it
Life is learning, continue it
Life is honesty, be honest
Life is death, accept it
Life is smartness, be smart
Life is courage, drive it!

शोभा शर्मा,
Facilitator
नयाबाँस

Seeing Things

I aim't afraid of snakes or toads
or bugs or worms on mica.
And things that girls are scared of
I think are awful nice
I am pretty brave I guess
And yet I have to go to bed
For when I am tucked up warm and smiling
And when my prayers are said
Mother tells me happy dreams
And takes away the light
And leaves me lying all alone
And seeing things at night
Sometimes they are in the corner
sometimes they are by the door

Aarti Kumari
10 Yrs.
Noida Public School, विद्यारत्न

Mom you' are a wonderful mother,
So gentle, yet, so strong
The mango ways you show you cere
Always make me feet. I belong
I have you mom total respect you so,
You are my choice. of mother
you' be the one I'd select!

Shivani
Year 12

Do not waste your time

Pushpa Rani
Facilitator

Do not waste your time
My dear friend.
Better You change your life trend
Time is wealth and time is money.
It gives us wisdom, power and health.
Never upon the petty thing you brood.
Every work should be done in time.
To make it a point is not crime.
Those who waste it can never shine.
For peace and progress always fine.
Time is a patient suffering for boldness.
Try to catch it with great boldness.
If you can not be a sun then be a star
If you can not be a high way.
Then be a path.

Pushpa Rani
Facilitator
अमाहपुर